परमात्म ऊर्जा

बाप का नाम याद आवे तो अपने को मास्टर ज़रूर समझो। नाम तो सभी को याद कराते हो। कितनी बार बाप का नाम मन से व मुख से उच्चारण करते होंगे। तो बाप के नाम जैसा मैं भी मास्टर त्रिमूर्ति शिव हूँ- यह स्मृति में रहे तो सफलता होगी। तो सदा सफलतामूर्त बनो। अभी सफलता पाने का समय नहीं। अगर 10 बार सफलता हुई, एक बार भी असफल हुए तो उसको असफलता कहेंगे। तो कर्त्तव्य और स्वरूप दोनों साथ-साथ स्मृति में रहें तो फिर कमाल हो। नहीं तो होता क्या है - मेहनत जास्ती हो जाती है, प्राप्ति बहुत कम होती है। और प्राप्ति कम कारण ही कमज़ोरी आती है। उत्साह कम होता है, हिम्मत उल्लास कम हो जाता है। कारण अपना ही है। अपने पाँव पर स्वयं कटारी चलाते हैं। इसलिए जबकि अपने आप ज़िम्मेवार हैं, तो सदैव अटेन्शन रहना चाहिए। तो आज से बीती को बीती कर के, स्मृति से अपने में समर्थी लाकर सदा सफलतामूर्त बनो। फिर जो यह अन्तर होता है- आज उमंग-उल्लास बहुत है, कल फिर कम हो जाता है, यह अन्तर भी खत्म हो जावेगा। सदा उमंग-उल्लास और सदा अपने में प्राप्ति का अनुभव करेंगे। माया को, प्रकृति को दासी बनाना है। सतयुग में प्रकृति को दासी बनाते हैं तो उदासी नहीं आती है। उदासी का कारण है प्रकृति का, माया का दास बनना। अगर उनके दास बने ही नहीं तो उदासी आ सकती है? तो कब भी माया के दास व दासी न बनना। यहाँ जास्ती माया व प्रकृति का दास बनेंगे तो उनको वहाँ भी दास-दासी बनना पड़ेगा। क्योंकि संस्कार ही दास-दासी का हो गया। यहाँ दास भी रहा, उदास भी रहा और वहाँ भी दास बनना- फायदा क्या! इसलिए चेक करना है- उदासी आई तो ज़रूर कहाँ माया का दास बना हूँ। बिगर दासी बने उदास नहीं हो सकते। तो पहले चाहिए परख, फिर परिवर्तन की भी शक्ति चाहिए। तो कब भी असफलतामूर्त न बनना। वह बनेंगे आपके पिछली प्रजा और भक्त। अगर विश्व का राज्य चलाने वाले भी असफल रहे तो सफलतामूर्त बाकी कौन बनेंगे!

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ के साइंटिस्ट्स, इंजीनियर्स एंड आर्किटेक्ट्स विंग द्वारा इंजीनियर्स डे के अवसर पर 'इंजीनियरिंग इन्नोवेशन फॉर ए मोर रेज़िलिएंट वर्ल्ड' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए संस्थान के अति.महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई, संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघल भाई, कमल कुमार,डीजीएम,आईओसीएल,आबू रोड तथा अन्य।

कथा सरिता

एक शहर में एक नूह नामक बूढ़ा व्यक्ति रहता था। उसका सम्बन्ध राजघराने से था फिर भी वह साधारण प्रजा की तरह रहता था। उसके भाई ही सारा राजकार्य सम्भालते थे। नूह बहुत धार्मिक और दान पुण्य करने वाला था जबकि उसके भाई ऐशप्रस्त थे और प्रजा पर अत्याचार करके धन इकट्ठा करते थे।

एक दिन की बात है, सूरज निकलने से पहले जब नूह के घर में सभी सो रहे थे। नूह को आकाशवाणी हुई कि यह दुनिया अब जल्दी ही भारी बारिश से जल-मग्न होने वाली है। इसलिए तुमको दो काम करने हैं, एक तो सब को बताना है विनाश के बारे में, दूसरा एक बेड़ा तैयार करना है जिसमें सभी जानवरों, पंछियों और पेड़-पौधों का एक-एक जोड़ा और उनके लिए छह मास का अनाज और पानी उसमें भरना है। साथ में जो लोग इस बात को मानेंगे, उन्हें साथ ले करके उनके लिए भी पर्याप्त सामग्री भरनी है।

जब नूह ने यह सभी नगर वासियों को बताया तो कुछ लोग ही माने और जो माने वह नूह का साथ देने के लिए तन, मन और धन से लग गए। एक ऐसा बेड़ा तैयार किया और दुनिया भर से सभी जानवर, पंछी और पौधों की किस्में मंगवा कर उसमें भरना शुरू कर दिया।

दूसरी तरफ उनके भाइयों ने घमंड में आकर आसमान को छूने वाली इमारतें बनाईं और कहा कि जब बारिश होगी हम बच जायेंगे क्योंकि पानी इतना नहीं भर सकता जितनी ऊंची इमारतें हैं।

आखिर में प्रलय का दिन आ गया, बारिश शुरू हुई और देखते ही देखते इतना तूफान शुरू हो गया कि सभी इमारतें ताश के पत्तों की तरह पानी में बह गईं। उधर नूह का बेड़ा पानी में तैरने लगा। लगभग छह मास तक बारिश होती रही। फिर एक दिन बारिश समाप्त हुई। सूरज दिखाई देने लगा।

नूह ने बेड़े की छत पर जा करके देखा तो दूर एक छोटा-सा ज़मीन का टुकड़ा दिखाई दिया। पानी से चारों और घिरा हुआ ज़मीन का टुकड़ा और उसमें फल और पानी की भरपूरता थी। नूह अपने साथियों के साथ वहीं रहने लग गया। वहाँ हर तरह के ऐश्वर्य एवं सुख सबके लिए थे।

आध्यात्मिक भाव : यह कहानी कलियुग के अंत व सतयुग के आदि के संगमयुग का चित्रण है। जैसे नूह को आकाशवाणी हुई, उसी प्रकार परमात्मा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा(सृष्टि के रचयिता) को भी साक्षात्कार हुआ सुख-शांति वाली सृष्टि के निर्माण और दुःखों की दुनिया के अंत का। जैसे नूह की बात कुछ ही लोगों ने मानी, ठीक उसी प्रकार परमात्मा की बात को भी कुछ ही लोग समझ पाए। नूह को जो ज़मीन समुंदर में मिली थी वह स्वर्ग है। अभी जो इस ईश्वरीय कार्य में मददगार बने, वे ही इस सुख के हकदार बनते हैं और वे ही इस विषय सागर से पार, नई दुनिया में जाते हैं।

नेपाल-कलैया। ब्रह्माकुमारीज़ के यातायात एवं पर्यटन प्रभाग नेपाल द्वारा आयोजित सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा 2080 विषयक 30 दिवसीय राष्ट्रीय महाभियान का ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर भव्य शुभारंभ हुआ। इस दौरान संस्थान की मुख्य क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. रवीना दीदी, बारा जिला के प्रमुख जिलाधीश नवराज सापकोटा, ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय माउण्ट आबू से मीडिया प्रतिनिधि एवं वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. रामस्वरूप मल, ब्रह्माकुमारीज़ यातायात एवं पर्यटन प्रभाग नेपाल के राष्ट्रीय संयोजक तथा महाभियान के अभियन्ता एवं परिकल्पनाकार राजयोगी ब्र.कु. गुणराज लामिछाने, जिला प्रहरी कार्यालय बारा के नवनियुक्त पहरी उपरीक्षक सुरेश काफ्ले, सशस्त्र पहरी बल 12 नं. गण के प्रहरी उपरीक्षक तोप बहादुर डंगोल, जिला अनुसंधान कार्यालय के उपनिर्देशक अभिनय कुमार सिंह, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीना दीदी, छपकैया सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. बेली दीदी, युवा प्रभाग बीरगंज के संयोजक ब्र.कु. गोवर्धन चौधरी तथा सह संयोजक गोकुल गुभाजू सहित विभिन्न संघ संस्था के प्रतिष्ठित प्रतिनिधिजन, पत्रकारजन, विभिन्न कॉलेज के विद्यार्थी तथा बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन फेज़ 7 में पब्लिक प्रोग्राम के पश्चात् एस.के. अग्रवाल,प्रेसिडेंट, डिस्ट्रिक्ट कंज़्यूमर कमिशन को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. रमा दीदी,सह संचालिका,राजयोगा सेंटर्स,मोहाली सर्कल, ब्रह्माकुमारीज़।

शांतिवन। अध्यात्म से जुड़े हॉलीवुड एवं बॉलीवुड अभिनेता,फिल्म प्रोड्यूसर,डायरेक्टर रॉक्सन वाटकर को ज्ञान चर्चा के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए राजयोगी ब्र.कु. दिलीप भाई।